

श्री मन्मथजी तुलसीदास कृत
(संस्कृत-संस्कृत) रसायण) तृतीय सोपान

॥ आरण्य काण्ड ॥

श्री विनायकी टीका सहित

जो

वाच्य य, व्यंग्यार्थ, गूढार्थ पूरित, शब्दालंकार
व अर्थालंकारालंकृत तथा विविध
कविस्वाधीविभूषित है।

जिसे

सहित्य भूषण पं० विनायकराव (उपनाम कवि 'नायक'
(पर्व) कविशेखर सुगर्भितेन्द्र प्रेम्नि

(साम्प्रत) पेशनर

लार्डगंज जबलपुर ने

रचकर प्रकाशित किया

सन् १९८०

यह टीका रसिकों की शर है
जो रसिकों को जीवित करती है ॥

१०० प्रति

मूल्य १० आना